धूप

कहानी : ज्योति दीवान
चित्र: दिगम्बर तळेकर

BGVS

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन-पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

धूप **Dhoop**
ज्योति दीवान Jyoti Divan

चित्रांकन **Illustration**
दिगम्बर तळेकर Digambar Talekar

पुस्तकमाला संपादक **Series Editor**
मनोज कुलकर्णी Manoj Kulkarni

ग्राफिक्स **Graphics**
अभय कुमार झा Abhay Kumar Jha

कम्पोजिंग **Composing**
प्रमोद मिश्रा Pramod Mishra

प्रथम संस्करण **First Edition**
जून, 2011 June, 2011

सहयोग राशि **Contributory Price**
55 रुपये Rs. 55

मुद्रण **Printing**
क्रिसेन्ट प्रिंट सॉल्यूशन्स Crescent Print Solutions
नई दिल्ली - 110 018 New Delhi - 110 018

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ISBN : 978-81921705-1-0

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI

Basement of Y.W.A. Hostel, G Block, Saket, New Delhi - 110 017
Phone : 011-2656 9943, Phone-Fax : 011-2656 9773
e-mail : bgvsdelhi@gmail.com, website : www.bgvs.org

धूप

कहानी : ज्योति दीवान
चित्र: दिगम्बर तळेकर

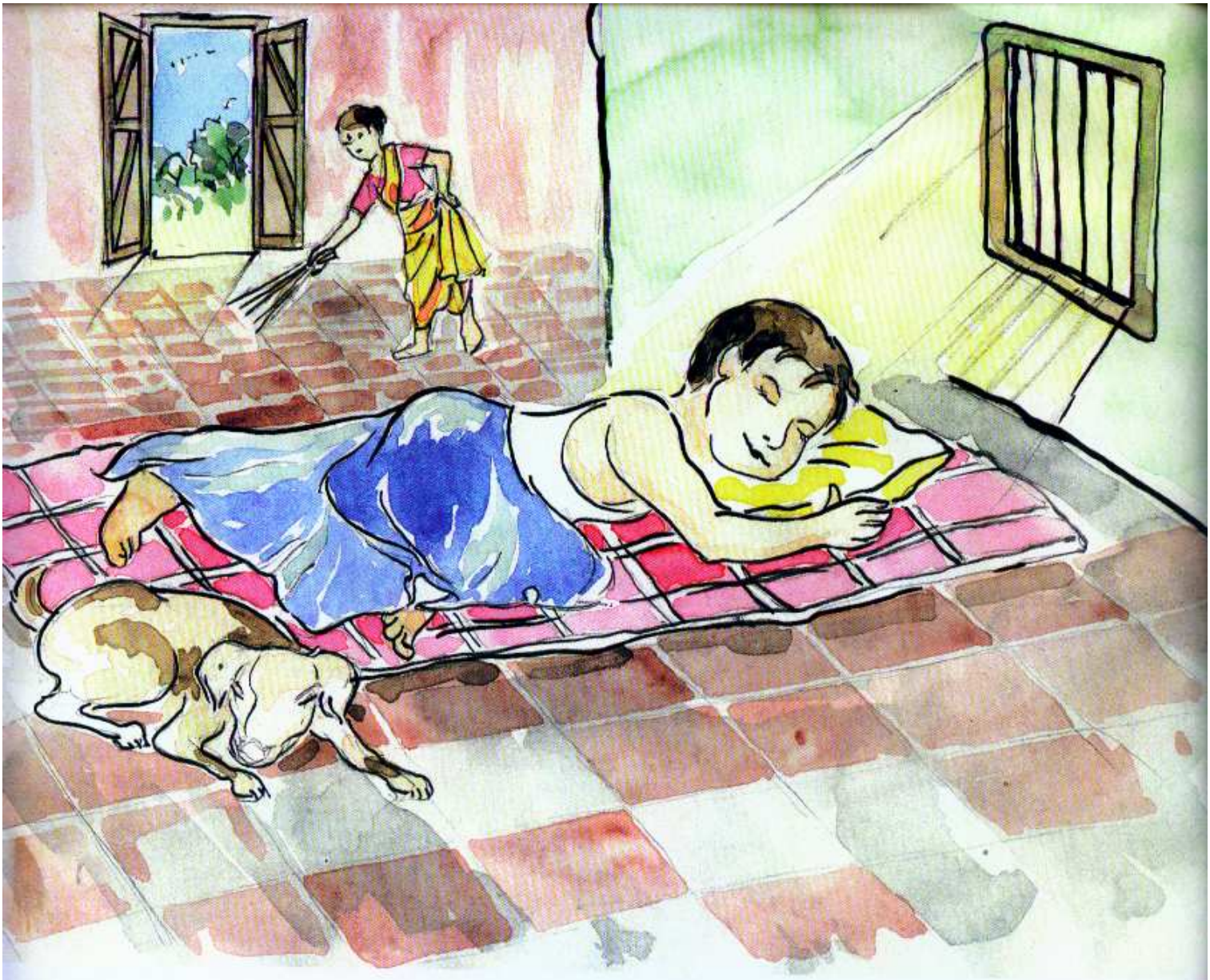

एक गांव में राजू नाम का एक लड़का रहता था।
एक दिन राजू आंगन में सोया था। सुबह–सुबह धूप चुपके से उसके पास आई और उसे जगाने लगी।

आंख मलता हुआ राजू धूप पर गुस्सा करने लगा, "क्यों रोज आकर परेशान करती है। सोने भी नही देती।"

तभी मां पास आकर बोली, "अरे राजू! जल्दी उठ! देख, सूरज सर पर चढ़ आया है। जा ये बिस्तर धूप में डाल आ।"

वो छत पर गया। उसने देखा, छत पर दादी चने फैला रही है। बगल वाली छत पर कमला मौसी मंगोड़ी बना रही है।

राजू सोच में पड़ गया कि धूप के क्या–क्या फायदे हो सकते हैं ?

सोचते–सोचते राजू स्कूल जाने की तैयारी में लग गया। नहाने के लिये उसने पानी में हाथ डाला। पानी कुछ कुनकुना सा था। उसको आश्चर्य हुआ। सुबह–सुबह तो पानी बहुत ठंडा था। अब कुनकुना कैसे हो गया?

अपने गीले कपड़े डालने राजू फिर से छत पर गया। उसने देखा कि पड़ोस की भाभी ने एक डिब्बे में दाल–चावल पकाने के लिये रखे है। उसने भाभी से पूछा, "आज आपने दाल–चावल धूप में क्यों रखे है ?"
भाभी ने बताया, "आज खाना धूप की गरमी से ही पकेगा।"

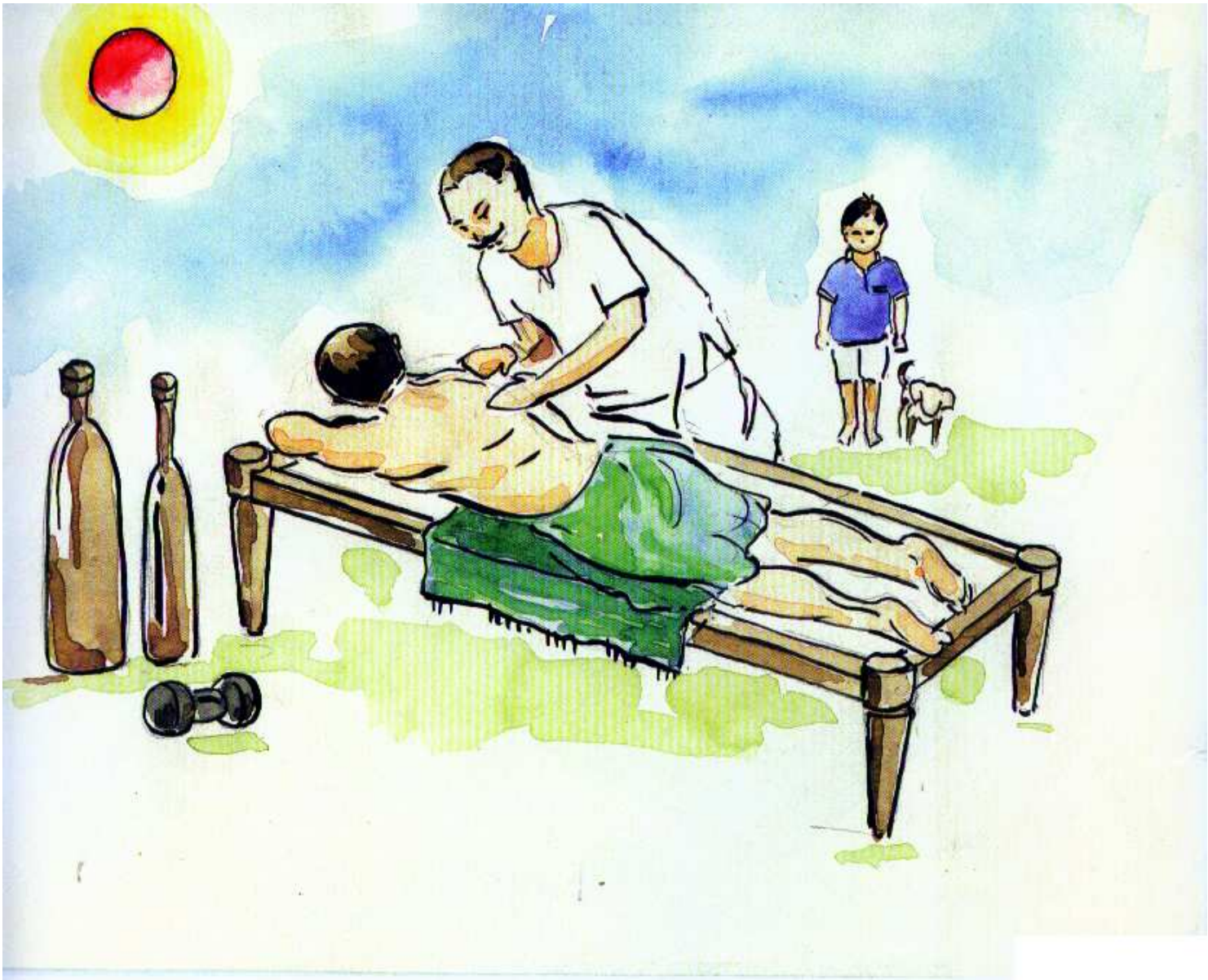

राजू ने स्कूल जाते समय देखा कि एक आदमी धूप में मालिश करा रहा है।

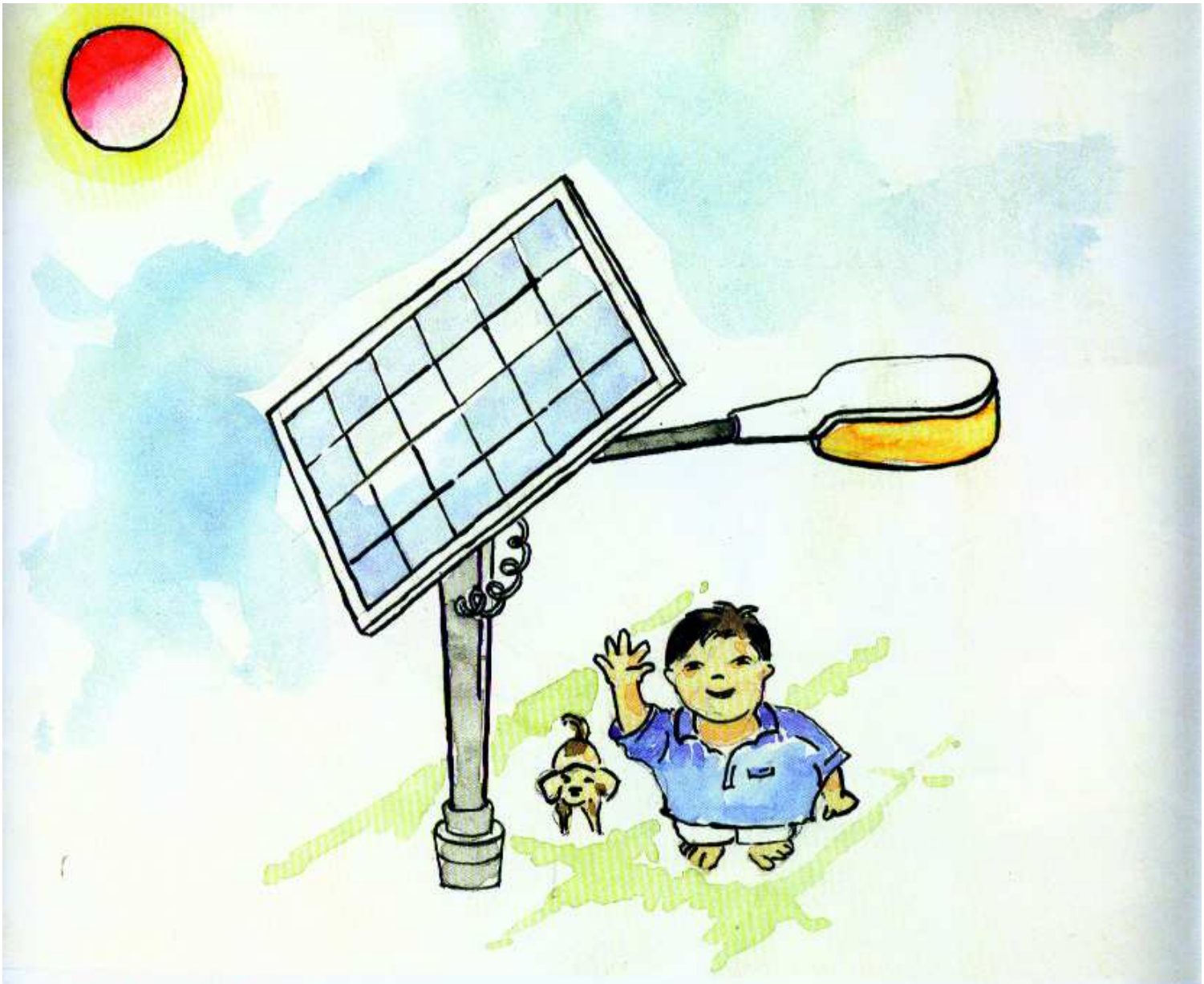

रास्ते में उसे बिजली का एक खंबा दिखाई दिया। जिस के ऊपर एक तख्ती लगी थी। पास खड़े एक भैया से उसने तख्ती के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि तख्ती सूर्य की गर्मी इकट्ठा कारती है, जिसके कारण बल्ब जलता है।

अब राजू को अपने सुबह वाले सवाल का जवाब भी मिल गया।

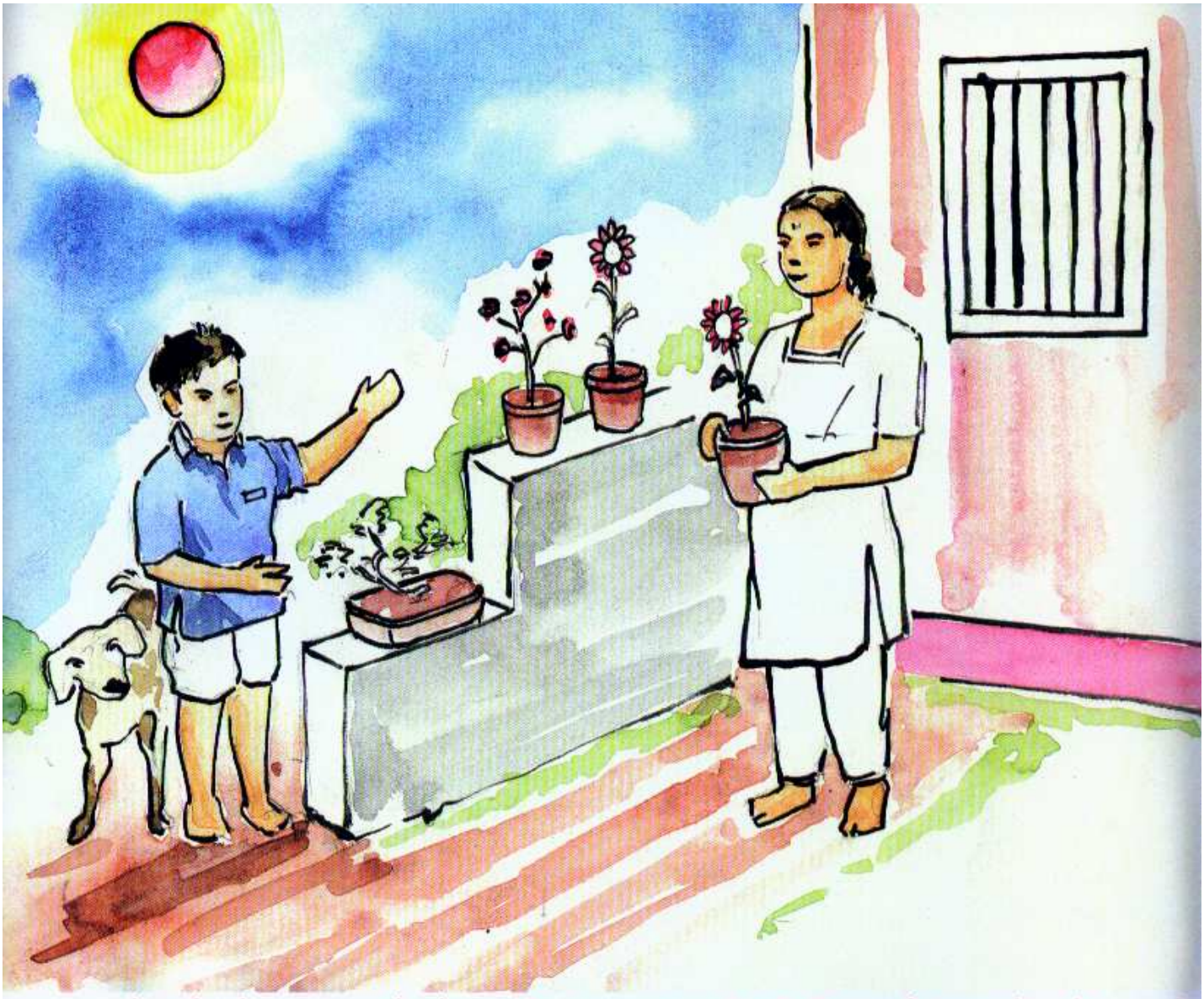

स्कूल से लौटने पर उसने देखा कि बगल वाली दीदी अपने गमलों को धूप में रख रही हैं। उसने दीदी से पूछा, "गमलों को धूप में क्यों रख रही है?" दीदी ने कहा, "इन्हें भी तो ठंड लगती है, न? इसलिये इन्हें धूप में रखना जरुरी है। धूप लगने के कारण ये स्वस्थ भी रहेंगे।"

अब राजू की समझ में आया कि धूप कितनी जरूरी है।

BGVS

सूरज को हम रोज देखते हैं।
सूरज हमें रौशनी देता है, धूप देता है।
धूप की हमें कितनी ज़रूरत है?
राजा जानना चाहता है।
आप भी तो जानना चाहोगे ना?